आरती नवदुर्गा जी की

अहो मात जग तारन माया ।
नौ दुर्गे ने स्म धारा कोई न्यारा न्यारा ।।
प्रथमे माता शैल पुत्री का नाम धराये ।
गिरी की पुत्री हो शंकर का ध्यान लगाये ।।
भई तपस्या पूर्ण मात ने बहु वर पाये ।
शिव शंकर कैलाशपति को पति बनाये ।।
शिव को पति बनाय के जी,
रचा ब्याह महाराज ।
प्रथम शैल पुत्री भयी,
कीना जग का काज । मात
द्वितीय अपना स्म ब्रह्मा ने आप दिखाया,
सब जग में किया वास ज्योति भई मोहनमाया ।
ज्वालामुखी पहाड़ आन एक स्थान बनाया,
अग्नि स्म हो आय मातु ने खेल रचाया ।
द्वितीये ब्रह्मचारिणी भई,
जो सब जग किया प्रकाश ।
सन्तजनों की करी पालना,
दुष्टों का कर नाश । मात
तृतीये ब्रह्मा विष्णु माई को शीश नवावें,
देवन के महादेव माई का ध्यान लगावें ।
इन्द्रादिक सुर देव मात ने सब उपजाये,
अपना कार्य करो हम तुम्हें सुनाये ।
तृतीये चन्द्रघण्टा भई जी,
तुमरा घण्टा शब्द सुनाया ।
तीन लोक तारन तरन,
मस्तक चन्द्र सुहाय । मात
चार कर्म चार वर्ण मातु ने आप बनाये ।
ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र जिनके नाम धराये ।।
तप करने को मात ब्राह्मण धर्म चलाये ।

युद्ध विद्या के कारन क्षत्री परम्पराये ।।
वैश्य उदर व्यापार को जी, शुद्र को सेवा दीन ।
कुष्मांडाते चतुर्थकम्,
चौथा रूप धर लीन । मात
पांचों देवता मात आपने लिए बुलाये,
सकल जगत विख्यात मात की शरणी आये ।
आज्ञा हमको देउ चरन पर शीश नवाये,
तुम तप करने को जाउ मातुने वचन सुनाये ।
तप करने को चल दिए जी,
ब्रह्मा, विष्णु, महेश ।
पंचम स्कंदमातेति
मैं सुमरूं, आदि गणेश । मात
सब देवन के हेतु महामाई बन आई,
अंग ज्वालपामातु ज्वालकी ज्योति सवाई ।
जलविच दर्शन दिया झलकती कला दिखाई,
देख रूप विकराल देवन मन धीरज आई ।
सभी देव स्तुति करें,
तुम सुनो गरीब निवाज ।
पष्टम कात्यायनी भई
राखी भक्त की लाज । मात
सप्तम काली रूप कालिया काल बनाओ,
धर्मराज धरा नाम धर्म को वचन सुनाओ ।
असुर बिडारन कारण आप दीवान लगाओ,
अपनी भृकुटि खोल काल भैरों उपजाओ ।
रत्नागिरि पर आय के जी,
असुरन खेत बिछाय ।
सप्तम कालरात्रि का बना,
रूप न वरना जाय । मात
सुरनर मुनिजन सकल देवता मंगल गावें,
अष्टपहर दिन रैन शेष तेरी स्तुति गावें ।
कर कृपा कृपालु भवानी सब जन ध्यावें ।
अष्टभुजी सिंहवाहिनी जी,

तीनों दल संहार ।
महा गौरी के भेष में,
लखिन रूप अपार । मात
नौवें दुर्गा मात, मातु का ध्यान लगाये,
नौ नाथ चौरासी सिद्ध तेरे द्वार आये ।
पंडित आसन बैठ के चण्डी पाठ सुनाये ।।
नौवें सिद्धि धात्रीतिया,
जो नव दुर्गा प्रकीर्तता ।
जनानाथ शरणी पड़े,
तुमही मात पिता । मात

विवरण

हे नवदुर्गा माँ ! आप अपनी माया से सम्पूर्ण जगत् का बेड़ा पार लगाती हो ।
आपने नवदुर्गा के रूप में प्यारे-प्यारे रूप को धरा है ।

प्रथम बार आप माता शैल पुत्री के नाम से जानी गईं । आप हिमालय की पुत्री थीं। आपने शंकर जी को पति के रूप में पाने केलिए कठिन से कठिन तपस्या किया और आपकी तपस्या पूर्ण भी हो गई, यानि शंकर जी ने आपकी तपस्या से प्रसन्न होकर आपको वर दिया कि वे आपको पति के रूप में अवश्य मिलेंगे और आपने शंकर जी को अपना पति बना भी लिया, इस तरह से आप शैलपुत्री के नाम से सम्पूर्ण संसार के कार्य को भिन्न -भिन्न रूप से सम्पन्न किया ।

द्वितीय बार आपने अपना रूप ब्रह्मा दिखाया और सारे संसार में आपने अपनी जगह बना लीं, जिससे सारे संसार में उजाला फैल गया । ज्वालामुखी पहाड़ पर आपने अपना एक स्थान बनाया तथा अग्नि के रूप में आपने तरह-तरह के खेल रचाये । अर्थात् द्वितीय बार आपने माता सरस्वती का रूप धरा और सारे जग में ज्ञान रूपी प्रकाश फैलाया तथा सन्तजनों की सेवा की तथा दुष्टों का नाश किया ।

आपके तृतीय (तीसरे) स्म को ब्रह्मा एवं विष्णु भी शीश नवाते हैं । सम्पूर्ण देवों के देव शंकर जी भी आपका ध्यान करते हैं । आप ही से इन्द्र आदि देवताओं का भी निर्माण हुआ है । आपके तीसरे स्म का नाम चन्द्रघण्टा है, जिनके माथे पर चन्द्रमा सुशोभित होते हैं तथा जिनकी कृपादृष्टि से ही सारे जग का भला होता है।

आपके चौथे स्म ने चार कर्म एवं चार वर्ण बनाये, जिसके नाम ब्राह्मण, क्षत्रीय, वैश्य एवं शूद्र र खे । तपस्या करने के लिए आपने ब्राह्मण धर्म को बनाया, युद्ध करने केलिए क्षत्रीय धर्म की परम्परा को बनाया, वैश्य को व्यापार करने केलिए बनाया तथा शूद्र को सबकी सेवा करने के लिए बनाया, इस प्रकार चौथे स्म में
आपने कूष्मांडा देवी का स्म धारण कर लिया ।

आपने पाँचों देवताओं को अपने पास बुला लिया । सम्पूर्ण जगत में विख्यात देवता माता की शरण में आयें एवं उन्हे प्रणाम करके उनसे आज्ञा माँगने लगे । माता ने उन्हें वन मे जाकर तपस्या करने की आज्ञा दे दीं । पाँचों देवता (ब्रह्मा,विष्णु, महेश, गणेश, कार्तिकेय) माता की आज्ञा मानकर तपस्या करने को चल दिये । हम इनके इन्ही गुणों के कारण इन्हें पंचम स्कंद मातेति के नाम से इनका ध्यान करते हैं ।

सब देवताओं के लिए ये माता महामाया बन के आईं । इन्होनें जल के बीच दर्शन दिया था तथा अपनी झलकती हुई कला दिखाई थी । इनके अंग से अग्नि के ज्वाला की ज्योति निकलती रहती थी, इनके इस विकट स्म को देखकर सभी देवताओं के मन में धैर्य हुआ था, सभी देवता इनकी स्तुति करने लगे थे । छठे स्म में इनका नाम षष्टम कात्यायनी हुआ, जो सदा गरीबों का दुःख दर्द सुनती हैं तथा अपने भक्तों की लाज रखती हैं ।

सातवें स्म में इन्होने अपना महाकाली का स्म बनाया एवं सम्पूर्ण संसार में धर्म के वचन का पालन करने लगीं तथा राक्षसों का संहार करने लगीं एवं अपनी भृकुटी खोलकर आपने काल भैरव को जन्म दिया।रत्नगिरि पर आकर आपने राक्षसों का संहार करके एक क्षेत्र सा बना दिया।सातवें कालरात्रि के स्म में आपका ये स्म वर्णन करने के योग्य

नहीं है ।

आठवें रूप में आपने अष्ठभुजी (आठ हाथों वाली) सिंहवाहिनी का रूप लिया तथा तीनों दल का नाश किया । आपका ये महागौरी रूपी भेष की महिमा निराली है । देवता, मुनि एवं मनुष्य सभी आपके इस रूप के गुण को गाते हैं तथा आठों घड़ी, दिन एवं रात सभी आपकी वन्दना करते है एवं आपको ध्यान में रखकर अपने
ऊपर आपकी कृपादृष्टि बनाए रखने केलिए प्रार्थना करते हैं ।

नवें रूप में आपने प्रकृति देवी के रूप का धारण किया, जिसका नाम सिद्धि धात्रीतिया पड़ा । आपके इस रूप को नवों नाथ एवं चौरासी सिद्धि प्राप्त किये हुए देवता आपकी शरण में आकर आपका ध्यान लगाते हैं एवं पडित अपने आसन पर बैठकर आप चण्डी का पाठ सुनाते हैं । हे माँ ! आप ही पूरे संसार की माता एवं पिता हो, हम आपकी शरण में आये हुए हैं, हमें अपनी भक्ति का आशीर्वाद दो ।

visit www.astrogyan.com for more aarthi's, free indian astrology horoscope charts & predictions.
all information © since 2000, Aks Infotech Pvt. Ltd., portal designed & developed by Pintograph Pvt. Ltd.